بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Moh 9682536974 E-Mail: ansarullah@qadian.in | Khulasa Khutba-21.06.2024 | محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع گورداسپور (پنجاب)

बनू नज़ीर नामक युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा **21 जून 2024**. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बः में यहूदी क़बीले बनू नज़ीर के षड्यन्त्र के परिणाम स्वरूप आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या करने का वर्णन हो रहा था, उसको सविस्तार बयान करूँगा कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने उनकी योजना को असफल किया। इसके विषय में लिखा है कि वह्यी के माध्यम से आँहज़रत ﷺ को इस षड्यन्त्र का पता चला तथा इसका विवरण यूँ बयान हुआ है कि उमरू बिन हजाश छत के ऊपर पहुंच गया ताकि आँहज़रत ﷺ पर पत्थर फेंके तो आँहज़रत ﷺ को यहूदियों की योजना के बार में वह्यी के माध्यम से इसकी सूचना मिल गई। आप ﷺ तुरन्त अपने स्थान से उठे तथा इस तरह रवाना हो गए जैसे आप ﷺ को कोई काम है और आप ﷺ तेज़ी से वापस मदीना तशरीफ़ ले गए। आप ﷺ के सहाबी यही समझे कि आप ﷺ किसी आवश्यक काम के लिए तशरीफ़ ले गए हैं। परन्तु जब देर हो गई तो सहाबा رضی اللہ عنہم को चिंता हुई और वे आप ﷺ को खोजने के लिए उठे। मदीने से आते हुए एक व्यक्ति ने सहाबा رضی اللہ عنہمको बताया कि मैंने आप ﷺ को मदीने में दाख़िल होते हुए देखा था। सहाबी رضی اللہ عنہم तुरन्त मदीना में आप ﷺ के पास पहुंचे। तब आप ﷺ ने सहाबियों को बताया कि बनू नज़ीर ने क्या षड्यन्त्र किया था।

दूसरी ओर यहूदी आप ﷺ की हत्या करने तथा सहाबियों को पकड़ने के विषय में विचार कर रहे थे कि मदीने से आए हुए एक यहूदी न जब यह सुना तो उसने कहा कि मैंने तो आप ﷺ को मदीने में दाख़िल होते हुए देखा है जिस पर यहूदी आश्चर्य चकित रह गए। एक अन्य सीरत के लेखक ने इसके विषय में

लिखा है कि आप ﷺ अल्लाह की वह्यी के अनुसार तुरन्त उठ गए। सहाबा किराम ﷺ को आप ﷺ ने इस लिए कुछ नहीं बताया क्यूँकि वे इस भयावह योजना के वर्तुल में नहीं थे। यहूदियों का मूल उद्देश्य केवल आप ﷺ की ज़ात थी इस लिए आप ﷺ संतुष्ट थे कि मेरे सहाबी न केवल सुरक्षित रहेंगे बल्कि वे मुझे खोजते हुए तुरन्त निकल जाएँगे। कहते हैं कि उस समय यह आयत भी नाज़िल हुई कि-

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ अर्थात- ऐ वे लोगो जो ईमाल लाए हो, अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब एक कौम ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह तुम्हारी ओर अपने (उपद्रवी हाथ) लम्बे करेंगे, किन्तु उसने तुमसे उनके हाथों को रोक लिया, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह ही पर मोमिन पूर्ण भरोसा करें।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इस बारे में लिखा है कि यहूदियों ने प्रत्यक्षतः आप ﷺ के तशरीफ़ लाने पर ख़ुशी प्रकट की, परन्तु उन्होंने योजना बनाई कि यह अति उपयुक्त अवसर है कि आप ﷺ का काम तमाम कर देते हैं। यहूदियों में से एक व्यक्ति सलाम बिन मशकम नामक ने इस योजना का विरोध किया तथा कहा कि यह विश्वासघात है तथा उस सन्धि के विरुद्ध है जो हम लोग मुहम्मद ﷺ के साथ कर चुके हैं, किन्तु उन लोगों ने न माना।

रसूलुल्लाह ﷺ के जाने के बाद यहूदी अपने किए पर बड़े दोषी अनुभव कर रहे थे। एक यहूदी कनाना बिन सवीरा अथवा सूरिया ने कहा कि तौरात की क़सम, निश्चित ही मैं जानता हूँ कि मुहम्मद (ﷺ) को सूचित कर दिया गया है जो तुमने उसके साथ धोखे की योजना बनाई। अल्लाह की क़सम, निःसन्देह वे अल्लाह के रसूल स. हैं, उन्हें वह्यी के द्वारा बता दिया गया है कि तुम धोखा दही से काम लेना चाहते थे, निःसन्देह वे अन्तिम नबी हैं। तुम चाहते थे कि अन्तिम पैग़म्बर हारून की पीढ़ी से आए परन्तु अल्लाह तआला ने जहाँ से चाहा उन्हें नियुक्त किया। निःसन्देह हमारी किताबें जिन्हें हम तौरात में पढ़ते हैं, उनमें लिखा हुआ है कि उस नबी का जन्म मक्का में होगा तथा वह यसरब अर्थात मदीने की ओर हिजरत करेगा। उसके जो गुण हमारी किताब तौरात में बयान किए गए हैं, केवल एवं केवल इनके बारे में पुष्टि करते हैं। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हें रक्त-पात के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। तुम अपनी सम्पदा, सम्पत्तियाँ तथा बच्चे रोते बिलकते छोड़ जाओगे। यदि तुम मेरी दो बातें मान लो तो उसी में तुम्हारी भलाई है। पहली यह कि तुम इस्लाम क़बूल करके मुहम्मद ﷺ के साथी बन जाओगे तो तुम्हारी सम्पत्तियाँ एवं तुम्हारी संतानें सुरक्षित रहेंगी तथा तुम लोग उनके ऊँचे स्तर वाले साथियों में से बन जाओगे। दूसरी बात यह कि प्रतीक्षा करो, निकट भविष्य में वह तुम्हें आदेश देगा कि तुम मेरे नगर से निकल जाओ। इस पर तुम कहना कि हाँ। इस पर वह तुम्हारी जानें तथा माल अपने लिए हलाल नहीं बनाएगा और तम्हारे माल तथा सम्पत्तियाँ तुम्हारे लिए छोड़ देगा। इस पर उन्होंने कहा कि हम इसके लिए तय्यार हैं। मदीना पहुंच कर आप ﷺ ने यहूदियों को देश से निकल जाने का आदेश पारित फ़रमाया, परन्तु उन्होंने इससे इंकार किया तथा मुक़ाबले करने पर जम गए।

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. लिखते हैं कि आप ﷺ ने औस नामक क़बीले के एक सरदार मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी. को बुलाकर फ़रमाया कि तुम बनू नज़ीर के पास जाओ तथा उनके साथ इस विषय के सम्बंध में सवाद करो तथा उनसे कहो कि चूँकि वे अति उपद्रवी हो गए हैं तथा उनका विद्रोह अपनी चरम सीमा को पहुंच गया है इस लिए अब उनका मदीने में रहना ठीक नहीं है, यह उचित होगा कि वे मदीना छोड़ कर किसी अन्य स्थान पर जाकर आबाद हो जाएँ। आप ﷺ ने उनके लिए दस दिन की सीमा रेखा निश्चित फ़रमाई। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ो. जब उनके पास गए तो वे प्रत्यक्षतः अति अहंकार के साथ पेश आए तथा कहा कि मुहम्मद (ﷺ) से कह दो कि हम मदीने से निकले के लिए तय्यार नहीं हैं, तुमसे जो करना हो कर लो। जब उनका यह जवाब आँहज़रत ﷺ को पहुंचा तो आप स. ने सहसा फ़रमाया कि अल्लाहु अकबर! यहूदी तो युद्ध के लिए तय्यार बैठे हैं।

इसके बाद आप ﷺ ने मुसलमानों को तय्यारी करने का आदेश दिया तथा सहाबियों के एक समूह को साथ लेकर बनू नज़ीर के मुक़ाबले पर मैदान में निकल आए। बनू नज़ीर खुले मैदान में मुसलमानों के विरुद्ध नहीं निकले तथा क़िले में बन्द होकर बैठ गए। इस अवसर पर सलाम बिन मिशकम ने कहा कि हम भी जानते हैं कि आप अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं क्यूँकि उनके परिचय की विशेषताएँ हमारे यहाँ किताबों में मौजूद हैं, यदि हम उनका अनुसरण नहीं करते तो उसका कारण यह है कि हम उनसे ईर्षा रखते हैं क्यूँकि इनके कारण नबुव्वत बनू हारून से निकल चुकी है, आओ हम उनके द्वारा प्रस्तावित शांति के सुझाव को स्वोकार कर लें तथा उनके नगर से निकल जाएँ अन्यथा दूसरी अवस्था में हम अपनी बस्तियों से निकाल दिए जाएँगे। हमारी समृद्धि एवं प्रतिष्ठा नष्ट हो जाएगी, हमारे बच्चे बन्दी बन जाएँगे तथा हमारे यौद्धाओं का वध कर दिया जाएगा। परन्तु सलाम बिन मिशकम की इन बातों की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

शासन के इन विद्रोहियों का विनाश करने के लिए जो शासन के मुख्या की हत्या करने की योजना बना चुके थे, क्यूँकि उस समय आँहज़रत ﷺ उस शासन के मुख्या थे, तथा अब बजाए पश्चाताप के हथ्यिार बन्द होकर युद्ध की घोषणा कर चुके थे। मदीने को एक महा रक्त-पात से बचाने के लिए तथा मदीने की सुरक्षा के लिए इन विद्रोहियों को खदेड़ना अनिवार्य हो गया था इस लिए विवश होकर आप ﷺ को भी इनके विरुद्ध मैदान में निकलना पड़ा।

आप ﷺ ने अपने पीछे इब्ने मकतूम को अपना अस्थाई प्रतिनिधि नियुक्त फ़रमाया तथा मदीने से निकल कर बनू नज़ीर की बस्ती का घेराव कर लिया। आप ﷺ ने सेना का अमीर हज़रत अली رضی اللہ عنہ को तथा एक कथन के अनुसार हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ को अमीर नियुक्त फ़रमाया। इस प्रकार मुसलमानों ने रात इस अवस्था में गुज़ारी कि वे यहूदियों का घेराव किए हुए थे तथा बार बार नाराए तकबीर बुलन्द करते रहे, यहाँ तक कि जब सवेरे का उजाला होने लगा तो हज़रत बिलाल رضی اللہ عنہ ने फ़जर की अज़ान दी। उस समय

आँहज़रत ﷺ दस सहाबियों के साथ वापस सेनागृह कक्ष में तशरीफ़ ले आए जो आप ﷺ के साथ थे। आप ﷺ ने फ़जर की नमाज़ पढ़ाई। यहूदियों में से एक व्यक्ति अज़बक नामक था। उसने रसूलुल्लाह ﷺ के तम्बू का निशाना लगा कर एक तीर मारा, वह तीर तम्बू पर लगा। आप ﷺ ने तम्बू को वहाँ से हटा कर तीर चलाने वालों से दूर लगाने का निर्देश दिया। इसी बीच एक रात इशा के समय हज़रत अली رضی اللہ عنہ सेना में से ग़ायब पाए गए तो रसूलुल्लाह ﷺ से निवेदन पूर्वक पूछा कि या रसूलुल्लाह ﷺ ! अली رضی اللہ عنہ कहीं नज़र नहीं आ रहे। आप ﷺ ने फ़रमाया उनकी चिंता न करो क्यूँकि वे तुम्हारे ही एक काम से गए हैं। थोड़ी ही देर हुई थी कि हज़रत अली رضی اللہ عنہ उस व्यक्ति का सिर काट लाए जिसका नाम अज़बक था तथा जिसका तीर रसूलुल्लाह ﷺ के तम्बू तक पहुंचा था।

हज़रत अली उसको घात में बैठ गए थे, जब वह मुसलमानों के किसी बड़े सरदार को मारने के लिए चला था। उसके साथ एक सैन्य दल भी था। हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने उस पर हमला किया तथा उसका वध कर दिया। उसके साथ जो दूसरे लोग थे, वे सब निकल भागे। रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ के साथ दस लोगों का एक दल रवाना फ़रमाया जिसमें हज़रत अबू दजाना رضی اللہ عنہ और हज़रत सहल बिन हुनैफ़ رضی اللہ عنہ भी थे। इन लोगों ने उस दल को जा पकड़ा जो अज़बक के साथी थे तथा हज़रत अली رضی اللہ عنہ को देख कर भाग निकले थे। सहाबियों के दल ने इन सबको मार डाला। कुछ विद्वानों ने लिखा है कि उस दल में दस व्यक्ति थे। सहाबा رضی اللہ عنہ ने उन लोगों की हत्या करके उनके सिर ले आए जिन्हें बाद में विभिन्न कुओं में डाल दिया गया। एक कथन के अनुसार रसूलुल्लाह ﷺ ने उनके सिरों को बनू ख़तमा के कुओं में फेंकने का आदेश दिया था। शेष विवरण इन्शाअल्लाह आगे बयान करूँगा।

द्वित्तीय ख़ुत्बः के बाद मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने के विषय में फ़रमाया कि मुझे किसी ने बताया कि जब आप लोग सफ़ों में खड़े होते हैं तो कन्धे से कन्धा नहीं मिलाया होता। अब जो कोविड का दौर था वह बीत गया, सफ़ बनाते हुए कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े होना चाहिए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131